गद्य कल्प

(दीर्घकालीन कृति-विधाओं का संकलन)

श्री ब्रजमोहन गुप्त 'इन्द्रनारायण'



[illegible]

[illegible]

प्रथम संस्करण : १९८८

प्रकाशक :

साहित्यवाणी,
२८ पुराना अल्लापुर, इलाहाबाद।

आवरण एवं सज्जा :
अशोक सिद्धार्थ

संपादक : लक्ष्मीनारायण दुबे

मूल्य : रु० ६००,००
सम्पूर्ण ग्रंथावली

मुद्रक :
पियरलेस प्रिंटर्स,
बाई का बाग, इलाहाबाद।

जिल्दबंदी :
विश्वनाथ बुक बाइंडर्स,
बैरहना, इलाहाबाद।

Edition 1988

BALKRISHNA SHARMA 'NAVIN' GADYA RACHANAVALI
Published by SAHITYAVANI, 28, Purana Allahapur, Allahabad

Edited by L.N. Dubey
Price Per set Rs. 600

मानव संसाधन विकास मंत्रालय, शिक्षा विभाग, नई दिल्ली, के आंशिक वित्तीय सहयोग से प्रकाशित

साहित्यवाणी

पंचम खण्ड

लकृष्ण शर्मा
नवीन
गद्य रचनावली

संपादक
प्रो. लक्ष्मीनारायण दुबे

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

:वीन जी : खान-पान की अपनी शैली

क भारतीय आत्मा' और नवीन जी : मन की बातें

भारतीय संविधान की भाषा-विषयक नीति का विरोध क्यों ?

श्री बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', एम० ए०

[illegible]

[illegible] का प्रश्न

[illegible]

संविधान की ३४३ [illegible]

[illegible] भारतीय संविधान के ३४३ वें अनुच्छेद में [illegible] भाषा विषयक नीति की स्पष्ट घोषणा कर दी है। यह अनुच्छेद [illegible] शब्दों में यह घोषित करता है कि "संघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी होगी।" इसके उपरान्त ३५१ तक जितने अनुच्छेद हैं, वे भाषा-विषयक भिन्न-भिन्न समस्याओं [illegible]

[illegible]

[illegible] सांस्कृतिक, राजनीतिक [illegible] और [illegible] का [illegible] नहीं है [illegible] यह [illegible] भी [illegible] हम [illegible] के लिए [illegible] करता है कि [illegible] प्रयत्न हुए हैं और वे प्रयत्न कुछ [illegible] सफल भी हुए हैं।

भाषा का देशज रूप आवश्यक

अब हमारा यह कर्तव्य है कि हम [illegible] होकर [illegible] की भाषा को वह स्वरूप दें जो सब भर में समझा जा सके, जिसमें [illegible] न हो और जो हमारे देश की आत्मा के [illegible] हो। इस विचार से सामञ्जस्य [illegible] का प्रयत्न नितान्त आवश्यक है। मुझे खेद है कि शिक्षा-मन्त्रालय द्वारा निर्मित शब्द सामञ्जस्य-स्थापन के स्थान पर और अधिक [illegible]

यह [illegible] क्यों ?

[illegible]

राष्ट्रभाषा एवं व्याख्यान

द्रा कुमारी चौहान की पुत्री सुधा अमृत राय
भ विवाह के अवसर पर लिखा गया पत्र

[illegible] कार्यालय
कानपुर
19/2-[illegible]

[illegible],
[illegible]

[illegible] ing to know
[illegible] u have not been able to
[illegible] peet yet. Let me
[illegible] cloth of [illegible]
[illegible] ll mean some thing
[illegible] to your abilities
[illegible] clean [illegible] have [illegible]
[illegible] things that [illegible]
[illegible] been able to do all [illegible]
[illegible] happens,
[illegible] colossal waste. [illegible]
[illegible]
[illegible] back [illegible]
[illegible] best
[illegible] to
[illegible] your verdict upon
[illegible] particularly [illegible]
[illegible] respect [illegible]
[illegible]
[illegible] challenge [illegible]

[illegible]
[illegible] Krishna

यकृष्ण दास को लिखा गया पत्र

अनुक्रम

प्रथम प्रकरण / राष्ट्र-भाषा 17-44

हिन्दुस्तानी का प्रचार घातक है, हमारी राष्ट्रभाषा का प्रश्न, राष्ट्रभाषा संस्कृति का अविच्छेद्य अंग है, हिन्दी में परिभाषिक शब्दावली, भारतीय संविधान की भाषा-विषयक नीति का विरोध क्यों? भारत की राष्ट्र-भाषा हिन्दी ही है।

द्वितीय प्रकरण / भाषण एवं वक्तव्य 45-138

प्रथम राजनैतिक सम्मेलन जिला शाजापुर (राज्य ग्वालियर) के सभापति पं० बालकृष्ण शर्मा का भाषण, प्रांतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन : सभापति का भाषण, राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रति हमारा

कर्त्तव्य, नगर-कांग्रेस समिति, कानपुर में भाषण, समस्त कांग्रेस जन में पूर्ण एकता आवश्यक, देशवासियों का राष्ट्रीय कर्त्तव्य, कानपुर में गांधी-श्राद्ध, हिन्दी ही राष्ट्रभाषा होने योग्य है (वक्तव्य), खुश करने की अनुचित नीति, बापू का पथ, गांधी जयंती, संसदीय वाद-विवाद, मध्यभारत हिन्दी साहित्य सम्मेलन के ग्वालियर के प्रथम अधिवेशन का अध्यक्षीय भाषण, उत्तर प्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन के बस्ती अधिवेशन का अध्यक्षीय भाषण, 32 वें निखिल भारत वंग साहित्य सम्मेलन के हिन्दी साहित्य एवं कवि सम्मेलन का अध्यक्षीय भाषण ।

तृतीय प्रकरण / अनुवाद 139-204

'हमारी संसद' (पुस्तक : 31 दिसम्बर, सन् 1957) : लेखक : श्री एम० अनंत शयनम् अयंगार, अनुवाद : पं० बालकृष्ण शर्मा 'नवीन,' । हमारा संविधान, हमारा भारत, हमारी राजधानी : दिल्ली, प्राचीन भारत में लोकतंत्र, हमारी संसद का विकास, संसद भवन, संसद का उद्घाटन, संसद की कार्य-विधि–1, 2 ।

परिशिष्टावली 205-208

प्रथम परिशिष्ट : 'नवीन' जी के जीवन से संबंधित कुछ प्रमुख घटनाएँ (कालक्रमानुसार), द्वितीय परिशिष्ट : 'नवीन' जी की रचनाएँ, तृतीय परिशिष्ट : 'नवीन' संदर्भ साहित्य ।

□□

